International Journal of Education and Science Research Review
E-ISSN 2348-6457
Volume-9, Issue-2 March-April- 2022 P-ISSN 2349-1817
www.ijesrr.org Email- editor@ijesrr.org

''माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के व्यक्तित्व पर विभिन्न भौगोलिक क्षेत्रों के प्रभाव का अध्ययन''

शोध निर्देशक
डॉ राम प्रताप सैनी
पंजीयन सं. JJT/2K9/EDU/688

सहशोध निर्देशक
डॉ. राजेन्द्र झाझड़िया
पंजीयन सं. JJT/2K9/EDU/0571

सुरेश कुमार
पी–एच.डी. (एज्यूकेशन) (छात्र)
पंजीयन सं. 20119004
जे.जे.टी.विश्वविद्यालय,
चुड़ेला, झुंझुनूं

प्रस्तावना –

भौगालिक दृष्टि से पूरे भारत में विविधताएँ पायी जाती हैं, इन्हीं विविधताओं के कारण ही किसी क्षेत्र को मैदान, मरूस्थल, पहाड़ी, बर्फीले, जंगल आदि क्षेत्रों में प्राकृतिक सीमाओं के द्वारा विभाजित किया गया है।

हम चाहे राजस्थान के मरू, मैदानी या पहाड़ी क्षेत्र आदि किसी के बारे में भी विशद रूप से छानबीन करें तो वहाँ के निवासियों की क्रियाओं पर भौगोलिक छाप स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर होगी। उनकी सामाजिक व्यवस्था और सामाजिक जीवन का ताना–बान अपने वातावरण से सम्बन्धित ही मिलेगा। विभिन्न वातावरण में विभिन्न मानव समूहों ने अपनी भौतिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए न केवल वातावरण में ही परिवर्तन किया है वरन् अपने आपको उससे अनुकूलन/समंजन भी किया है। इस समंजन के फलस्वरूप उसके उपार्जित ज्ञान का क्षेत्र निरन्तर बढ़ता गया। किसी भौगोलिक क्षेत्र की स्थिति, भौतिक स्वरूप, संरचना अथवा जलवायु किसी जाति अथवा सामाजिक संगठन के ऐतिहासिक विकास को व्यक्त करती है। मरू, मैदानी एवं पहाड़ी क्षेत्रों के सम्बन्ध में यह बात विशेष रूप से लागू होती है। सत्य तो यह है कि छोटी से छोटी भौगोलिक इकाई का अध्ययन भी समष्टि रूप से ही करना चाहिए, व्यक्तिगत तथ्यों का अध्ययन उद्देश्य को पूरा नहीं करता। भौगोलिक तथ्य एवं मानव अभिव्यंजना में पारस्परिक सम्बन्ध है।

विभिन्न भौगोलिक परिस्थितियों में रहनेवाले लोगों का बौद्धिक स्तर भी अलग–अलग होता है। पहाड़ी क्षेत्र में रहने वाले विद्यार्थियों का रहन–सहन, बौद्धिक स्तर मरू व मैदानी क्षेत्र में रहने वाले विद्यार्थियों

से भिन्न होता है। मरू व पहाड़ी क्षेत्रों में रहने वाले लोगों का अधिकांश जीवन विभिन्न आपदाओं से जुझने में ही व्यतीत हो जाता है।

विभिन्न विद्वानों द्वारा इन भौगोलिक क्षेत्रों के भौतिक–परिवेश, जलवायु, वातावरण आदि का मानव जीवन पर कितना गहन प्रभाव पड़ता है, इस पर विविध मत/टिप्पणियों का अध्ययन कर एवम् मरू, मैदानी व पहाड़ी क्षेत्र की जलवायु जैसी महत्त्वपूर्ण बातों को ध्यान में रखते हुए शोधकर्ता के मन में निम्नलिखित समस्या पर शोध करने का विचार प्रस्फुटित हुआ है कि क्या विभिन्न भौगोलिक क्षेत्रों के विद्यार्थियों के व्यक्तित्व में अन्तर पाया जाता है, इन सभी जिज्ञासाओं की पूर्ति हेतु शोधकर्ता ने निम्नलिखित विषय पर शोध करने का निश्चय किया : ''माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के व्यक्तित्व पर विभिन्न भौगोलिक क्षेत्रों के प्रभाव का अध्ययन''।

अध्ययन का महत्व :–

व्यक्तित्व की प्रमुख विशेषता उसकी एकता है। व्यक्ति का बाह्य आचरण, उसकी जन्मजात तथा अर्जित वृतियों, उसकी आदतें और स्थायी भाव, उसके आदर्श और जीवन के मूल्य ये सब मिलकर एक ऐसे प्रमुख स्थाई भाव या आदर्श को जन्म देते हैं, जो मनुष्य के व्यक्तित्व का प्रमुख आधार है।

व्यक्तित्व, व्यक्ति के सभी पक्षों का एक विशिष्ट संकलन होता है, जो उसके सम्पूर्ण रूप को प्रदर्शित करता है। कुछ पक्ष अन्य की अपेक्षा अधिक विशिष्टता लिये हुए होता है जैसे– दूसरों के साथ आपका आचरण, वेशभूषा, प्रेरणा और दूसरों की दृष्टि से आपकी नैतिकता और सदाचार की मात्रा आदि। आपकी संवेदन और प्रत्यक्षीकरण की प्रक्रियाओं, सीखने की क्षमता, स्मरण एवं तर्क शक्ति और आपकी प्रेरक प्रक्रियाओं के रूप को पृष्ठभूमि में डाल देते हैं। साधारणतया व्यक्तित्व शब्द का प्रयोग व्यक्ति के आकार, डील–डौल, रंग–रूप तथा उसका दूसरे व्यक्तियों पर पड़ने वाले प्रभाव से लगाया जाता है।

उपर्युक्त सभी बातों को ध्यान में रखते हुए शोधकर्ता ने ''माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के व्यक्तित्व पर विभिन्न भौगोलिक क्षेत्रों के प्रभाव का अध्ययन'' करने का निर्णय लिया है। इस प्रकार का अध्ययन कार्य आज तक बहुत ही कम हो पाया है। अतः माध्यमिक स्तर के अध्येताओं की समस्याओं का अध्ययन कर तथा उन पर विभिन्न भौगोलिक क्षेत्रों के प्रभाव का अध्ययन कर संचालकों, समाज एवं राष्ट्र को एक नई दिशा दिखाने में यह शोधकार्य मार्गदर्शन कर सकेगा।

समस्या कथन :–

''माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के व्यक्तित्व पर विभिन्न भौगोलिक क्षेत्रों के प्रभाव का अध्ययन''

अध्ययन के उद्देश्य :–

1. विभिन्न भौगोलिक क्षेत्र के विद्यार्थियों के व्यक्तित्व का परस्पर तुलनात्मक अध्ययन करना।

अध्ययन की परिकल्पनाएँ :–

1. विभिन्न भौगोलिक क्षेत्र के विद्यार्थियों के व्यक्तित्व में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।

अध्ययन का परिसीमन :–

1. शोध का क्षेत्र राजस्थान राज्य रहेगा।
2. राजस्थान राज्य को 3 भौगोलिक क्षेत्र के आधार पर मरू क्षेत्र (बीकानेर संभाग), मैदानी क्षेत्र (भरतपुर संभाग) व पहाड़ी क्षेत्र (उदयपुर संभाग) को न्यादर्श में सम्मिलित किया गया है।
3. उक्त तीनों क्षेत्रों से माध्यमिक स्तर के 1200 विद्यार्थियों (600 बालक + 600 बालिकाएं) को न्यादर्श के रूप में लिया गया है। प्रत्येक क्षेत्र से 400-400 विद्यार्थियों को (200 बालक +200 बालिकाएं) चयनित किया गया है।

शोधविधि :–

प्रस्तुत अध्ययन में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है क्योंकि अनुसंधान की यह एक वैज्ञानिक विधि है। इस विधि द्वारा प्राप्त निष्कर्ष वैध एवं विश्वसनीय होते हैं।

अध्ययन में प्रयुक्त उपकरण :–

व्यक्तित्व मापनी :–

प्रस्तुत शोधकार्य में शोधकर्ता द्वारा डॉ. महेश भार्गव द्वारा निर्मित मापनी को आधार माना गया है।

अध्ययन में प्रयुक्त सांख्यिकी :–

प्रस्तुत शोध अध्ययन में प्रयुक्त सांख्यिकी मध्यमान (M), प्रमाणिक विचलन (SD) एवं C.R. Value की गणना की जायेगी।

समंकों का सारणीयन एवं विश्लेषण :-

प्रस्तुत शोधकार्य में अनुसंधानकर्ता ने संकलित एवं व्यवस्थित आंकड़ों का विश्लेषण जिस प्रकार किया है, उसका परिकल्पनानुसार विवरण निम्न प्रकार है -

सारणी संख्या - T.IV.1

विभिन्न भौगोलिक क्षेत्र के छात्र एवं छात्राओं के व्यक्तित्व में मध्यमान अन्तर की सार्थकता

न्यादर्श	संख्या (N)	माध्य (Mean)	मानक विचलन (S.D.)	क्रांतिक अनुपात मान (C.R..Value)	सार्थकता स्तर	
					.05	.01
छात्र	150	124.03	11.51	1.36	सार्थक अन्तर नहीं हैं।	
छात्रा	150	122.16	12.29			

(df=N_1+N_2 −2=150+150−2=298)

विश्लेषण :-

उपर्युक्त सारणी में गणना द्वारा प्राप्त मान तालिका मान से कम है। इस आधार पर परिकल्पना को स्वीकृत किया जाता है। अर्थात् विभिन्न भौगोलिक क्षेत्र के छात्र एवं छात्राओं के व्यक्तित्व में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

हिन्दी संदर्भ साहित्य

1 चौबे, सरयू प्रसाद : ''शिक्षा मनोविज्ञान'' इण्टरनेशनल पब्लिकेशन हाऊस, मेरठ पेज न. ¼2005½ 184

2 चोहान, एस.एस : ''सर्वागीर्ण बाल विकास'' आर्य बुक डिपों, करोल बाग नई दिल्ली पेज ¼1996½ प. 591

3 भटनागर, सुरेश : ''शिक्षा मनोविज्ञान'' लोयल बुक डिपो मेरठ पृष्ठ संख्या-153 ¼2009½

4 भटनागर, आर.पी- : ''शैक्षिक अनुसंधान के मूल तत्व'' द्वितीय संस्करण विनोद पुस्तक मंदिर आगरा पृष्ठ संख्या-107 ¼1973½

5 भार्गव, ऊषा ¼1993½ : ''किशोर मनोविज्ञान'' राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर पृष्ठ संख्या-99

6 शर्मा, वन्दना एवं राजकुमारी ¼2006½ : ''शिक्षा मनोविज्ञान एवं मापन'' राधा प्रकाशन आगरा पृष्ठ संख्या-92